WK 03 (021-344)

डॉ० किशक पटेल (हिन्दी विभाग)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर।
दिनांक - 27.7.2020

BA II

प्रश्न – 'मानस का हंस' उपन्यास के आधार पर उपन्यास की नायिका रत्नावली का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर – 'मानस का हंस' यद्यपि पुरुष-प्रधान उपन्यास है तथापि जो नारी-पात्र इसमें चित्रित हुए हैं उनमें रत्नावली एक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख नारी-पात्र है। रत्नावली चरित-नायक गोस्वामी तुलसीदास की सहधर्मिणी और एक आदर्श नारी है। एक आदर्श नारी के समस्त गुण उनमें विद्यमान हैं। रत्नावली चित्रकूट-विक्रमपुर के निकट एक गाँव के पंडित और प्रसार ज्योतिषी दीनबन्धु पाठक की पुत्री हैं। एकमात्र सन्तान होने के कारण पाठकजी उसे न केवल पुत्रवत प्यार करते थे

बालक पुत्र की भाँति ही रखते और विद्यार्जन कराते थे। रत्नावली चौदह वर्ष की हो चुकी थी। पंडित जी किसी सुपात्र की खोज में थे, जिसे वे घर-जमाई बनाकर अपने पास रख सकें। किन्तु उन्हें अपनी लड़की के लायक कोई लड़का जँचता नहीं था। किन्तु जब पाठकजी ने तुलसीदास को देखा तो वे उनके रूप-गुण और योग्यता से प्रभावित होकर उनके साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया। किन्तु रत्नावली और तुलसीदास का दाम्पत्य जीवन एकात्मा प्रेम के बावजूद अधिक स्थायी न रह सका।

एक बार यों ही विनोद में रत्नावली ने तुलसीदास को कामी पुरुष की संज्ञा देते हुए उन्हें राम-मार्ग से विपथगामी हो जाने पर लांछित किया। तुलसीदास को यह बात कचोट गयी। परिणामस्वरूप वे वैरागी बन गए।

WK 04 (023-342)

पेज ③

कालान्तर में रत्नावली ने उनके साथ रहने के कई प्रयास किन्तु असफल रहीं। इस प्रकार एक विदुषी, सुन्दरी, आदर्श पत्नी और सर्वगुणसम्पन्न नारी को विरहिणी जीवन बिताते हुए अन्ततः मृत्यु का वरण करना पड़ा। रत्ना- गार्हस्थ्य जीवन की दृष्टि से रत्नावली का जीवन प्रायः कष्टों और दुखों में बीता। नागरजी ने रत्नावली के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लिखा है —

गौर वर्ण की एक तन्वंगी सामने थी। तेज-युक्त ललाट, पतले होंठ, नाक और ठोड़ी नुकीली लम्बी आँखों में दर्प-भरी चमक थी। उसने एक बार तुलसीदास की ओर देखा। चार आँखें अनायास ही मिलीं। तुलसी के हृदय में मचती हुई हलचल दृष्टि मिलते ही थम गई। एकाएक उनके भीतर बाहर मानो सन्नाटा छा गया।

क्रमशः